प्राथमिक/उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में बालिकाओं की नामांकन संख्या की प्रगति का अध्ययन (सन् 1977 से 2005)

(उत्तराखण्ड राज्य के टिहरी एवं उत्तरकाशी जनपदों के संदर्भ में)

*डॉ. ऋतु डंगवाल

शिक्षा सभ्य समाज की नींव है। यदि हम सभ्य समाज व विकसित राष्ट्र की कल्पना करें तो प्रत्येक नागरिक को शिक्षित करना अनिवार्य होगा। क्योंकि शिक्षा व्यक्ति को समाज व राष्ट्र के प्रति जागरूक करने की शक्ति प्रदान करती है। स्वामी दयानन्द जी ने जोरदार शब्दों में कहा था कि– ''राष्ट्र, समाज, प्रशासन एवं परिवार के क्रियाकलाप तब तक उचित ढंग से नहीं किए जा सके जब तक स्त्रियों को शिक्षा न मिले।''

गढ़वाल मण्डल के टिहरी व उत्तरकाशी जनपदों की महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक व शैक्षिक विकास की बात करें तो इसके लिए इस क्षेत्र की महिलाओं में आत्मशक्ति व आत्मविश्वास जागृत करने के लिए उन्हें आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाना होगा।

भौगोलिक विस्तारः– गढ़वाल मण्डल उत्तराखण्ड राज्य का पर्वतीय भू–भाग है। इसका क्षेत्रफल 32451 वर्ग किमी. है। इस मण्डल की कुल जनसंख्या वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार 4915593 है तथा कुल साक्षरता 72.72% है जिसमें पुरूष साक्षरता 83.75% व महिला साक्षरता 62.26% है।

अध्ययन की आवश्यकताः– गढ़वाल मण्डल की अपनी विशेष भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि है। यहाँ महिलायें सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था की धुरी हैं। समाज की संरचना व उसके विकास में इनकी भूमिका का महत्व समाज के किसी भी अन्य वर्ग की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण है। आज सम्पूर्ण समाज तकनीकि युग में गतिशील है, जिसमें नारी की अद्भुत भागीदारी शामिल है जैसे कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स, किरन बेदी आदि इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। तो पर्वतीय क्षेत्र में नारी समाज को शिक्षा से वंचित कैसे किया जा सकता है? जबकि नारी की शिक्षा मात्र एक व्यक्ति की शिक्षा नहीं बल्कि सम्पूर्ण परिवार के साथ–साथ समाज की भी शिक्षा है।

अध्ययन के उद्देश्यः– गढ़वाल मण्डल के टिहरी व उत्तरकाशी जनपदों में बालिका शिक्षा की प्रगति एवं उसका तुलनात्मक अध्ययन करना है।

अध्ययन की रूपरेखाः– शोध–पत्र में गढ़वाल मण्डल के टिहरी व उत्तरकाशी जनपदों में बालिका शिक्षा की प्रगति एवं उसके सामाजिक विकास में हो रहे बदलाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से द्वितीयक स्रोतों से आंकड़ों को एकत्रित किया गया है। इसके अन्तर्गत दोनों जनपदों के अर्थ एवं सांख्यिकी विभागों से सन् 1977 से 2005 तक विभिन्न स्तरों जैसे प्राथमिक/उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में बालिकाओं की नामांकन संख्या का अध्ययन किया।

प्रदत्तों का विश्लेषणः– तालिका 1 में टिहरी एवं उत्तरकाशी जनपदों के प्राथमिक विद्यालयों में कुल विद्यार्थियों एवं बालिकाओं की नामांकन संख्या एवं प्रतिशत को दर्शाया गया है।

तालिका के अनुसार टिहरी जनपद में वर्ष 1977–80 के मध्य प्राथमिक विद्यालयों में कुल अध्ययनरत् विद्यार्थियों में से बालिकाओं की नामांकन संख्या में 8495 (22%) से 10898 (25%) तक वृद्धि दर्ज हुई जबकि उक्त अवधि में बालकों की नामांकन संख्या विद्यालयों में बालिकाओं से तीन गुना अधिक थी। वर्ष 1977 से 1980 तक बालिकाओं की नामांकन संख्या में 3 गुना इजाफ़ा हुआ किन्तु छात्र नामांकन दर को देखकर लगता है कि उक्त समय में जो उत्साह व प्रगति बालक शिक्षा के प्रति समाज में थी वह बालिका शिक्षा के प्रति नहीं देखी गई। संभवतः इसका मुख्य कारण माता–पिता का अशिक्षित होना, गांवों में विद्यालयों की सीमित संख्या के साथ–साथ सरकारी प्रोत्साहन का अभाव था। वर्ष 1981–90 के दशक में विद्यालयों में बालिकाओं की कुल नामांकन संख्या 26% से 34% के मध्य रही। उक्त अवधि में विद्यालयों में भर्ती बालिकाओं के प्रतिशत में कई बार उतार–चढ़ाव देखने को मिला। वर्ष 1985 में बालिकाओं की संख्या कुल नामांकन संख्या का 31% था किन्तु वर्ष 1990 में पुनः 22% तक के स्तर पर पहुंच गया। विश्लेषण से स्पष्ट है कि बालिकाओं की शिक्षा की प्रगति प्रतिशत के आधार पर वर्ष 1990 में 13 साल पुराने, वर्ष 1997 के स्तर पर लुढ़क गया। किन्तु विद्यालयों में बालिकाओं की नामांकन दर संख्यात्मक आधार पर 1977 की तुलना में वर्ष 1990 में तीन गुणी वृद्धि पाई गई। इस वृद्धि का एक कारण संभवतः लिंगानुपात में अंतर हो सकता है। दूसरा कारण भारत सरकार ने वर्ष 1986 में नई शिक्षा नीति घोषित की थी। वर्ष 1988–89 में भारत सरकार द्वारा प्राथमिक विद्यालयों में बालाहार योजना का शुभारंभ किया गया। वर्ष 1991 से 2000 तक की अवधि में प्राथमिक विद्यालयों में

राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बड़ेथी (चुंगी) उत्तरकाशी (उत्तराखण्ड)

बालिकाओं की नामांकन संख्या में 23% से 50% तक वृद्धि दर्ज हुई जो इस बात का सूचक है कि नारी शिक्षा में लगातार उत्साहजनक वृद्धि हो रही है। वर्ष 2001–04 तक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालिकाओं की नामांकन संख्या 51% थी। अतः वर्षवार विश्लेषण से स्पष्ट है कि भर्ती विद्यार्थियों की संख्या में से 50% की भागीदारी बालिकाओं की थी।

उत्तरकाशी जनपद के प्राथमिक विद्यालयों में वर्ष 1977 में बालिकाओं की संख्या कुल विद्यार्थियों के नामांकन संख्या का 28% था जो 1980 में घटकर 27% रह गया। वर्ष 1981–90 के दशक में विद्यालयों में भर्ती बालिकाओं की संख्या के साथ–साथ प्रतिशत में भी 28% से बढ़कर 38% तक वृद्धि हुई है। उत्तरकाशी जनपद के विद्यालयों में बालिका नामांकन संख्या में धीरे–धीरे वृद्धि हुई है। इससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि यहां का समाज बालिका शिक्षा के प्रोत्साहन के प्रति लगातार सक्रिय रहा है। वर्ष 1991 से 2000 तक प्राथमिक विद्यालयों में पहुंचने वाली बालिकाओं की संख्या में कुल भर्ती का 40% से 51% तक वृद्धि दर्ज हुई। वर्ष 2001–05 तक बालिकाओं की नामांकन संख्या का प्रतिशत कुल अध्ययनरत् विद्यार्थियों का 50% से 49% के मध्य रहा। वर्ष 2000–02 में बालकों की तुलना में बालिकाओं की नामांकन संख्या अधिक थी।

तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि दोनों जनपदों में वर्ष 1977–04 तक बालिका शिक्षा में उत्साहजनक प्रगति देखने को मिली। जिसमें बालिका शिक्षा के प्रति समाज के प्रत्येक छोटे–बड़े तबके में जागृति का द्योतक है। इसका उदाहरण वर्ष 2000 में टिहरी व उत्तरकाशी जनपदों की बालिका शिक्षा में संतोषजनक प्रगति देखी गयी जिसमें कि बालिकाओं की नामांकन दर बालकों की तुलना में अधिक थी। विश्लेषण से यह भी ज्ञात होता है कि दोनों जनपदों के विद्यालयों में बालिकाओं की नामांकन दर में हो रही वृद्धि कारण संभवतः सरकार द्वारा समय–समय पर विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रम जैसे ऑपरेशन ब्लैक–बोर्ड, बालाहार व पोषाहार योजना, सम्पूर्ण साक्षता अभियान, सर्वशिक्षा अभियान, विद्यालयों में मध्याह्न भोजन की व्यवस्था आदि कार्यक्रमों को चलाया जाना हो सकता है।

प्राथमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की नामांकन दर में प्रगति एवं विकास के उद्देश्य से वर्ल्ड एजुकेशन फोरम द्वारा डकार सेनेगल में अंगीकृत परिपत्र में सभी के लिए शिक्षा का लक्ष्य रखा गया है। भारत भी उक्त सम्मेलन में शामिल था। सभी के लिए शिक्षा हेतु भारत सरकार एवं राज्य सरकारों की सहभागिता से प्रारंभिक शिक्षा सार्वभौमिक हेतु सर्व शिक्षा अभियान कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। यह कार्यक्रम 2000–01 से आरंभ किया गया। इसके अन्तर्गत सभी बच्चों को अनिवार्य रूप से वर्ष 2007 तक 5 वर्षीय प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराना है। शिक्षा में लिंग भेद व सभी तरह के सामाजिक विभेदों को वर्ष 2007 तक समाप्त करना है व 2010 तक सभी विद्यार्थियों का विद्यालय में सार्वभौमिक ठहराव को प्रोत्साहन देना ताकि विद्यार्थी बीच में स्कूल को न छोड़ें।

''उत्तरांचल सभी के लिए शिक्षा परिषद्'' द्वारा सर्व शिक्षा अभियान के लक्ष्य को समयबद्ध रूप से चेष्टारत् है। इस उद्देश्य से प्रत्येक 250 की आबादी पर जहां 1 किमी. की दूरी पर प्राथमिक विद्यालय नहीं है। ऐसे कस्बों या आबादी क्षेत्रों में नवीन विद्यालय खोले जा रहे है। उससे कम आबादी पर शिक्षा गारंटी केन्द्र या वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र संचालित किए जा रहे हैं। विद्यालय से बाहर बच्चों की संख्या न्यून है, जिसे संभवतः आने वाले समय में अतिशीघ्र शून्य स्तर पर लाने का लक्ष्य रखा गया है।

तालिका 2 में जनपद टिहरी एवं उत्तरकाशी के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कुल विद्यार्थियों में से बालिकाओं की नामांकन संख्या एवं प्रतिशत को दर्शाया गया है।

टिहरी जनपद में वर्ष 1977–80 के मध्य उच्च प्राथमिक विद्यालयों में बालिकाओं की नामांकन संख्या 13% से 15% के मध्य थी। वर्ष 1978 बालिकाओं की नामांकन संख्या 22% के स्तर तक प्रत्याशित रूप में बढ़ा हुआ दृष्टिगोचर होता है। परन्तु बाद के तीन वर्षों में नामांकन संख्या 22% से घटकर 15% पर स्थिर रही लेकिन नामांकन प्रतिशत गिरने के बावजूद भर्ती बालिकाओं की संख्या में वर्षवार इजाफ़ा होता रहा है। वर्ष 1981–90 के दशक में उच्च प्राथमिक विद्यालयों में बालिकाओं की नामांकन संख्या में वृद्धि, इस दशक के प्रारंभिक नामांकन प्रतिशत की अपेक्षा 13% अधिक पाई गई है जो कि बालिकाओं की नामांकन संख्या में 6 गुना वृद्धि को दर्शाता है। वर्ष 1991 से 2000 तक विद्यालयों में बालिकाओं की नामांकन संख्या में 28% से 41% तक वृद्धि दर्ज की गयी। वर्ष 2001–04 तक बालिका नामांकन संख्या में 45% से 48% के मध्य वृद्धि दर्ज हुई। जनपद के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में बालिकाओं के नामांकन प्रतिशत में लगातार वृद्धि हुई है। यदि वर्ष 1977–04 के मध्य विद्यालय जाने वाली बालिकाओं की संख्या का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो उक्त समय अंतराल में भर्ती के प्रतिशत एवं संख्या में उत्साहजनक वृद्धि दृष्टिगोचर होती है।

उत्तरकाशी जनपद के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में कुल विद्यार्थियों में से बालिकाओं की नामांकन संख्या वर्ष 1977 में मात्र 198 (11%) व वर्ष 1980 में यह संख्या बढ़कर 1058 (18%) तक पहुंच गयी। वर्ष 1981–90 के दशक में बालिकाओं की नामांकन संख्या में मात्र 1% प्रतिशत की वृद्धि दर्ज हुई किन्तु वर्षवार संख्यात्मक तुलना की जाए तो 1981 में 1094 (19%) छात्राओं की नामांकन संख्या की तुलना में वर्ष 1990 में 1882 (20%) पाई गई। वर्ष 1991 से 2000 तक बालिका भर्ती का स्तर 31%

से 41% के मध्य रहा है। वर्ष 2001 में छात्राओं की नामांकन संख्या 12883 तक पहुंच गयी थी। विद्यालयों में अध्ययनरत् बालिकाओं की संख्या, बालकों की संख्या के लगभग आधी हो गयी है। किन्तु वर्ष 2005 में नामांकन संख्या घटकर 12303 के स्तर पर पहुंच गयी जो कि वर्ष 2002 में भर्ती बालिकाओं की तुलना में कम है। संभवतः छात्राओं की नामांकन संख्या में गिरावट इस क्षेत्र की विषम भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक व स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का होना है। कुल मिलाकर इस कमी के बावजूद बालिका शिक्षा के प्रति सामाजिक जागरूकता बढ़ी है। यही कारण है कि वर्ष 1977–05 तक बालिकाओं की नामांकन संख्या में उत्साहजनक वृद्धि दर्ज हुई है जो कि सरकारी–गैरसरकारी प्रयासों की सफलता के साथ शिक्षा के प्रति क्षेत्रीय जनता की जागरूकता का प्रतिफल है।

टिहरी व उत्तरकाशी जनपदों के उच्च प्राथमिक विद्यालयों का तुलनात्मक अध्ययन करने से स्पष्ट है कि टिहरी जनपद के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में बालिकाओं की संख्या उत्तरकाशी जनपदों की तुलना में अधिक है। इसका कारण संभवतः लिंगानुपात में भेद या टिहरी जनपद में बालिका शिक्षा के प्रति अधिक जागरूकता हो सकती है। 2001–04 तक टिहरी जनपद के विद्यालयों में बालिकाओं के नामांकन संख्या के प्रतिशत में लगातार वृद्धि हुई है जबकि उत्तरकाशी जनपद में वर्ष 2001 में भर्ती का आंकड़ा 12883 तक पहुंचने के पश्चात् वर्ष 2005 में 12303 की कमी को दर्शाता है।

तालिका 3 में टिहरी व उत्तरकाशी जनपदों के माध्यमिक विद्यालयों में भर्ती कुल विद्यार्थियों एवं बालिकाओं की संख्या व प्रतिशत को दर्शाया गया है।

टिहरी जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में वर्ष 1977–80 के मध्य बालिकाओं की नामांकन संख्या कुल भर्ती का 10% से 12% के मध्य थी। यह नामांकन संख्या जनपद के प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों की तुलना में कम थी। वर्ष 1981–90 तक बालिकाओं की नामांकन संख्या 12% से 19% के मध्य रही है। वर्ष 1982–83 में बालिकाओं की नामांकन संख्या 16% व 17% के मध्य रही है किन्तु इस प्रतिशत की तुलना में कुल विद्यार्थियों की संख्या में तीव्र वृद्धि दर्ज हुई है। वर्ष 1991 से 2000 के मध्य बालिकाओं की संख्या कुल नामांकन का 23% एवं 35% के मध्य थी। वर्ष 2001–04 तक बालिकाओं की भर्ती 42% से 43% तक वृद्धि दर्ज की गयी। वर्ष 1977–04 तक विद्यालयों में बालिकाओं की नामांकन संख्या में इजाफ़ा देखने को मिला।

उत्तरकाशी जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में वर्ष 1977 में अध्ययनरत् बालिकाओं की संख्या कुल नामांकन संख्या का 580 (15%) थी जो वर्ष 1980 में घटकर 368 (13%) पर पहुंच गयी। वर्ष 1979–80 में विद्यालयों में बालिकाओं की संख्या में वर्ष 1977–78 की तुलना में काफी कमी देखने को मिली। इस जनपद का भौगोलिक भू–भाग पहाड़ी एवं जंगली होने के साथ प्राकृतिक आपदाओं जैसे– भूकम्प, बादल फटना, अतिवृष्टि से होने वाली क्षति एवं बढ़ते प्राकृतिक संकटों से अभिभावक अपने पाल्यों को अधिक दूरी पर स्थित विद्यालयों में भेजना सहज स्वीकार नहीं करते हैं। इस जनपद में प्राथमिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों की तुलना में माध्यमिक विद्यालय गांव से अधिक दूरी पर स्थित हैं। वर्ष 1981–90 के मध्य माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालिकाएँ 14% से 22% के मध्य थी। वर्ष 1991 से 2000 तक दशक में भर्ती बालिकाओं का प्रतिशत 25 एवं 33 के मध्य था। वर्ष 2001–05 में भर्ती बालिकाओं की नामांकन संख्या क्रमशः 39% व 40% तक पहुंच गयी। तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि समय परिवर्तन के साथ–साथ बालिका शिक्षा में उत्साहजनक वृद्धि हो रही थी किन्तु बालक शिक्षा की तुलना में कम। दोनों जनपदों में वर्ष 1977 के प्रारंभ में बालिका शिक्षा के प्रति जागरूकता का अभाव, मूलभूत आवश्यकताओं की कमी, विद्यालयों की सीमित संख्या बालिका शिक्षा की प्रगति रूकावट मुख्य वजह थी। परन्तु विकास कार्यों के परिणामस्वरूप समय व परिस्थितियों में बदलाव से बालिका शिक्षा में तीव्रगति से प्रगति संभव हो सकी है।

निष्कर्षः– टिहरी एवं उत्तरकाशी जनपदों के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालिकाओं की संख्या प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों में भर्ती बालिकाओं की तुलना में कमी आयी है। इसका कारण संभवतः दोनों जनपदों का पर्वतीय भू–भाग होने के साथ–साथ ग्रामीण परिदृश्य है। ग्रामीण क्षेत्र में प्राथमिक व उच्च प्राथमिक विद्यालयों की संख्या की तुलना में माध्यमिक विद्यालयों की संख्या सीमित है। दोनों जनपदों का समाज/अभिभावक अपनी युवा होती बालिकाओं को शिक्षा प्राप्त करने हेतु अपनी नजरों से दूर भेजना पसंद नहीं करता है। इन जनपदों की बालिकायें पढ़–लिखकर लड़कों की बराबरी करना चाहती हैं किन्तु सुविधाओं के अभाव व कुछ रूढ़िवादिता के कारण इन्हें उत्साहवर्धक वातावरण नहीं मिल पा रहा है। इस पर्वतीय अंचल में पुरूष वर्ग रोजगार हेतु पलायन करता है जिसके कारण यहां की नारी का परिवार व समाज के सभी छोटे–बड़े कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका एवं अतिरिक्त दायित्व बढ़ जाता है जो कि नारी शिक्षा की प्रगति में मुख्य रूकावट है। नारी इस पर्वतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। इसलिए एक नारी की शिक्षा मात्र एक व्यक्ति की शिक्षा नहीं है बल्कि सम्पूर्ण परिवार व समाज की भी शिक्षा है। आज नारी वर्ग सम्पूर्ण समाज के लगभग आधे भाग का प्रतिनिधित्व करती है तो इसे शिक्षा से वंचित किया जाना बेईमानी एवं दुर्भाग्यपूर्ण होगा।

तलिका 1

टिहरी एवं उत्तरकाशी जनपदों के प्राथमिक विद्यालयों में छात्राओं की नामांकन संख्या एवं प्रतिशत।

वर्ष	टिहरी प्राथमिक विद्यालय (कक्षा 1 से 5 तक)		उत्तरकाशी प्राथमिक विद्यालय (कक्षा 1 से 5 तक)	
	कुल विद्यार्थी	छात्रायें (:)	कुल विद्यार्थी	छात्रायें (:)
1977	39423	8495 (22)	14062	3980 (28)
1978	38773	9491 (24)	15030	4097 (27)
1979	40354	9902 (25)	15267	4150 (27)
1980	44258	10898 (25)	15472	4192 (27)
1981	44910	11560 (26)	17326	4779 (28)
1982	48330	12749 (26)	17582	5092 (29)
1983	42378	14410 (34)	20066	6475 (32)
1984	58942	16250 (28)	20627	6605 (32)
1985	66420	20497 (31)	21170	7143 (34)
1986	65170	19380 (30)	22237	7425 (34)
1987	70092	21896 (31)	20182	6917 (34)
1988	69950	19931 (28)	25990	6727 (26)
1989	108493	24166 (22)	27291	7186 (26)
1990	111432	24953 (22)	20349	7633 (38)
1991	114153	25728 (23)	26430	10668 (40)
1992	115638	26052 (23)	27730	9588 (35)
1993	118197	26255 (22)	28017	12003 (43)
1994	119405	26509 (22)	29015	12007 (41)
1995	119094	27448 (23)	32341	15003 (46)
1996	130755	38917 (30)	32780	15150 (46)
1997	131435	39139 (30)	34148	15315 (45)
1998	120243	39079 (33)	34950	16052 (46)
1999	126432	45409 (36)	35497	16516 (47)
2000	96741	48150 (50)	33545	17176 (51)
2001	98736	49111 (50)	45075	22567 (50)
2002	98172	49365 (50)	49166	24859 (51)
2003	104946	54131 (52)	49829	24887 (50)
2004	101529	52021 (51)	50347	25081 (50)
2005	’	’	49967	24730 (49)

नोट : ’ आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं।

तलिका 2

टिहरी एवं उत्तरकाशी जनपदों के उच्च प्राथमिक विद्यालयों में छात्राओं की नामांकन संख्या एवं प्रतिशत।

वर्ष	टिहरी उच्च प्राथमिक विद्यालय (कक्षा 6 से 8 तक)		उत्तरकाशी उच्च प्राथमिक विद्यालय (कक्षा 6 से 8 तक)	
	कुल विद्यार्थी	छात्रायें (:)	कुल विद्यार्थी	छात्रायें (:)
1977	10134	1345 (13)	1816	198 (11)
1978	11578	1415 (22)	2062	202 (10)

1979	13403	1924 (14)	5215	1017 (20)
1980	14143	2123 (15)	5735	1058 (18)
1981	7276	1085 (15)	5906	1094 (19)
1982	8342	1292 (15)	6184	1028 (17)
1983	9392	1577 (17)	7066	1320 (19)
1984	11811	2748 (23)	7272	1049 (14)
1985	35567	6257 (18)	7279	1526 (21)
1986	23254	4347 (19)	7669	1766 (23)
1987	20584	2922 (14)	7719	1802 (23)
1988	22595	3643 (16)	9948	1832 (18)
1989	27318	7642 (28)	8975	1738 (19)
1990	28038	7815 (28)	9492	1882 (20)
1991	29004	8265 (28)	7666	2386 (31)
1992	29197	8346 (29)	8187	1481 (18)
1993	29475	8405 (29)	8043	2036 (25)
1994	30186	9171 (30)	10028	3003 (30)
1995	30644	8815 (29)	12265	4644 (38)
1996	51820	15558 (30)	19948	7690 (39)
1997	76514	24130 (32)	24002	8534 (36)
1998	73290	23089 (32)	28947	10300 (36)
1999	75522	23313 (31)	25455	9485 (37)
2000	38122	15546 (41)	29375	12155 (41)
2001	40478	18312 (45)	26901	12883 (48)
2002	41307	19801 (48)	24165	10301 (43)
2003	45143	21487 (48)	22412	11147 (50)
2004	45143	21507 (48)	23012	11376 (49)
2005	′	′	24003	12303 (51)

नोट : ′ आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं।

तलिका– 3

टिहरी एवं उत्तरकाशी जनपदों के माध्यमिक विद्यालयों में छात्राओं की नामांकन संख्या एवं प्रतिशत।

वर्ष	टिहरी माध्यमिक विद्यालय (कक्षा 10 से 12 तक)		उत्तरकाशी माध्यमिक विद्यालय (कक्षा 10 से 12 तक)	
	कुल विद्यार्थी	छात्रायें (:)	कुल विद्यार्थी	छात्रायें (:)
1977	4167	402 (10)	3799	580 (15)
1978	5721	553 (10)	4294	695 (16)
1979	5809	587 (10)	2755	346 (13)
1980	6154	708 (12)	2802	368 (13)
1981	9567	1110 (12)	3052	427 (14)
1982	20602	3330 (16)	4244	445 (10)
1983	20740	3586 (17)	4669	1213 (26)
1984	10441	1300 (12)	5133	720 (14)
1985	12551	1964 (16)	5253	830 (16)

1986	13489	2134 (16)	5628	913 (16)
1987	14032	2185 (16)	6071	1009 (17)
1988	17107	2530 (15)	6557	1584 (24)
1989	17610	3392 (19)	13401	2965 (22)
1990	18135	3470 (19)	13810	3070 (22)
1991	20773	4754 (23)	8152	2047 (25)
1992	23331	6172 (26)	9375	2166 (23)
1993	20075	5669 (28)	12733	4001 (31)
1994	20430	5794 (28)	12853	4021 (31)
1995	20869	5903 (28)	14410	4930 (34)
1996	23176	7466 (32)	14947	5115 (34)
1997	24201	7927 (33)	15316	5005 (33)
1998	22659	7758 (34)	13353	4404 (33)
1999	22216	7601 (34)	19084	5045 (26)
2000	21293	7470 (35)	15275	5042 (33)
2001	32786	13702 (42)	14148	5489 (39)
2002	36629	15393 (42)	15448	5832 (38)
2003	37439	16480 (44)	14941	5951 (40)
2004	38464	16615 (43)	15679	6327 (40)
2005	′	′	15667	6261 (40)

नोट : ′ आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं।

ग्रंथ–सूची

- भट्ट, ऋतु, 2005, ''उत्तरांचल राज्य के गढ़वाल मण्डल के टिहरी व उत्तरकाशी जनपदों में नारी की शिक्षा की प्रगति का अध्ययन (स्वतंत्रता प्राप्ति से सन् 2001 तक)'' हे॰न॰ब॰ गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल।
- उत्तरांचल सभी के लिए शिक्षा परिषद्, 2004, ''गुणवत्ता युक्त शिक्षा हेतु प्रशिक्षण की आवश्यकता पर राज्य संदर्भ समूह की कार्यशाला'', राज्य परियोजना कार्यालय, मयूर विहार, देहरादून, नवम्बर।
- सांख्यिकी शोध पत्रिका, 1977–2004, अर्थ व सांख्यिकी विभाग, जिला टिहरी गढ़वाल।
- सांख्यिकी शोध पत्रिका, 1977–2005, अर्थ एवं सांख्यिकी विभाग, जिला उत्तरकाशी।